(41) Lectur No:- 41.

Topic,

online class. (1)
Date. 13/5/2020
Time 10: to 10:50 A.M

(I) Rationalism

Dr. Sunita Kumari
Depart. of philosophy.
B.A part-I paper-II (H)
A.H.D. College shahpur
Patory, Samastipur.

Ans:-

अनुभववादियों के अनुसार ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन इन्द्रियानुभव ही है। सम्पूर्ण ज्ञान अनुभव की उपज है और बिना अनुभव से प्राप्त कोई भी ज्ञान मन में नहीं है। इनके अनुसार अनेक मौलिक तत्व प्रत्यय हैं जो अनुभव से प्राप्त होते हैं। अनुभववाद, बुद्धिवाद का विरोधी सिद्धान्त है। इसलिए

इसके समर्थकों ने बुद्धिवाद की कटु आलोचना की है।

बुद्धिवाद के अनुसार ज्ञान दो प्रकार के होते हैं:-
(1) साधारण और दार्शनिक

P.T.O.

सांसारिक विषयों से संबंधित ज्ञान को साधारण ज्ञान कहते है।

और वस्तुओं के (अधिकांश विषय) मर्यादा ज्ञान (Knowledge) को दार्शनिक ज्ञान (Philosophical Knowledge) कहते है।

बुद्धिवाद का संबंध दार्शनिक ज्ञान से है, यह ज्ञान सार्वभौम है तथा अनिवार्य होता है, यह सभी देश और काल के विषय मे सत्य होता है।

बुद्धिवाद गणितीय नियम से (प्रभावित) प्रभावित है, इसके अनुसार अनुभव जन्य ज्ञान को यानी हम जानते है कि अनुभव (बाहरी ज्ञान) द्वारा किसके विषय मे जानकारी प्राप्त करना ही सार्वभौमिकता तथा अनिवार्यता यानी मूल रूप से ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्यता का सदा अभाव रहता है, क्योंकि किसी कार्य मे

P.T.O.

भूत भविष्य और वर्तमान काल को और देशों के पदार्थों का अनुभव करना संभव नहीं है।

इस प्रकार अनुभववादी और बुद्धिवाद ज्ञान मीमांसीय परस्पर विरोधी सिद्धांत है।

दोनों के परस्पर विरोध निम्नलिखित तुलनात्मक बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट किये जा सकते हैं।

(1) बुद्धिवाद के अनुसार ज्ञान का एकमात्र स्रोत बुद्धि है, जबकि अनुभववाद एकमात्र स्रोत अनुभव को मानता है।

(2) बुद्धिवाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान का दैनिक जीवन के साधारण ज्ञान से भेद करना आवश्यक है। साधारण जीवन का अनुभव-जन्य भ्रमात्मक होता है, और अयथार्थ है। अनुभववाद ऐसा नहीं मानता। उसके अनुसार साधारण वस्तुओं का दैनिक अनुभव-जन्य ज्ञान यथार्थ ज्ञान है। etc END